मालिकपने का वर्सा ले रहे हैं।बाबा है विश्व का रचयिता।यह है हमारी एम आब्जेक्ट। कि हमको नर से नारायण बनना है।तुमको भी दाखिल होना है तो 8 रोज आकर पढ़ना होगा।बड़ी भारी मेहनत है।इतना अभिमान कोई तोड़ न सके।ऐसे2आदमी जल्दी आ नहीं सकते हैं।बाप समझाते हैं कि तुम भाई बहन हो।एक दो को समझा सकते हो।समझो कोई बच्चे हैं जो बहुत अच्छी सर्विस करते थे,बहुतों को समझाते थे,अब बाबा का हाथ छोड़ दिया है।अब यह तो तुम जानते हो कि शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं ब्रह्मा द्वारा। डायरेक्ट तो नहीं पढ़ा सकते हैं। तो बाबा कहते हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना करता हूँ।— राजयोग सिखाता हूँ।अगर कोई ने ब्रह्मा का हाथ छोड़ा तो गोया शिवबाबा का भी छोड़ा।विचार किया जाता-फलाने ने छोड़ा क्यों?तुम एक दो को लिख सकते हो- बहनजी आपतो शिवबाबा से वर्सा पाने लिए पढ़ती थी फिर छोड़ा क्यों? नसीबदार बनने के बदले बदनसीब क्यों बनी हो?तुम रूठी किससे?बहनों से रूठी होगी। तुम जो इतना वर्सा लेने वाली थी, फिर क्या हुआ? क्या सिखलाने वाले बाप ने तुमको कुछ कहा जो पढ़ाई छोड़ दी और बदनसीब बन गई। बाबा भी पूछ सकते हैं। तुमने राजयोग सीखना क्यों छोड़ा।तुम भी आश्चर्यवत बाबा का बनन्ती,कथन्ती, भागन्ती में आगई। अपनी तकदीर को लकीर लगा दी।समय देखकर उनको लिखना चाहिए। हो सकता है- पत्र पढ़ने से फिर जग जावें।गिरे हुए को बचाना होता है।डूबने से किसको बचाया जाता है तो आफरीन देते हैं।यह भी डूबने से बचाना है। ज्ञान की ही बातें हैं। लिखना चाहिए तुमने खिवैया का हाथ छोड़ा है तो डूब मरेंगी।तारू लोग(तैरने वाले) अपनी जान को जोखिम में रख दूसरों को बचाते हैं।कोई पूरा तैरने वाला नहीं होता है तो खुद भी गुम हो जाता है। तुम भी कोई को डूबता देखते हो तो 10-20 चिट्ठियाँ लिखो। यह कोई इन्सल्ट नहीं है। तुमने इतना समय हाथ पकड़ा औरों को भी समझाया फिर तुम कैसे डूबती हो। तुम प्रेम से लिखो-बहन जी तुम तो राजयोग सीख पार जाने वाली थी, अब तुम डूब रही हो। तरस पड़ता है। तो बिचारी को बचावें। फिर कोई बचता है वा नहीं- यह तो हुई उनकी तकदीर।

दूसरी बात यह जो प्रदर्शनी में ओपिनियन लिख देते हैं कि यहाँ नर से नारायण बनने का मार्ग बताया जाता है। यह राजयोग बहुत अच्छा है,बस लिखा बाहर निकला तो भूल गया।इसलिए जो लिखते हैं उनकी पीठ करनी चाहिए कि तुमने यह ओपिनियन लिख दिया परन्तु किया क्या।न अपना फायदा किया न दूसरों का।पहले मुख्य बात है - मात पिता की पहचान देनी है।इसलिए बाबा ने प्रश्नावली बनाई है।तो पूछो परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?क्या वर्सा मिलता है।यह लिखाना चाहिए।बाकी सारी प्रदर्शनी समझाकर पिछाड़ी में लिखने से कोई फायदा नहीं।मुख्य बात है मातपिता का परिचय दिया।अब समझा है तो लिखो।नहीं तो गोया कुछ नही समझा। हड्डी(दिल से) समझाकर फिर लिखवाना चाहिए।बरोबर यह जगत अम्बा,जगत पिता हैं।वह लिख दे बरोबर बाप से वर्सा मिलता है।यह लिखकर दे तब समझें तो तुमने कुछ सर्विस की है। फिर अगर नहीं आते हैं तो चिट्ठी लिखनी है कि बरोबर यह जगत अम्बा और जगतपिता हैं तो फिर वर्सा लेने क्यों नहीं आये?अचानक काल खा जायेगा।मेहनत करनी चाहिए।प्रदर्शनी के मुश्किल कोई दो चार आते हैं तो फायदा क्या हुआ।बच्चों को पुरुषार्थ करना चाहिए। आना छोड़ दें तो चिट्ठी लिखनी चाहिए।तुम बेहद के बाप से वर्सा लेते थे फिर माया ने तुमको पकड़ लिया है।प्रभु का तरफ छोड़ देते हो।यह तो तुम अपना पद भ्रष्ट कर देंगी। जो महावीर होगा वह झट संजीवनी बूटी देंगे।यह बेहोश हो गया,माया ने नाक से पकड़ लिया तो उनको बचावें।इतनी मेहनत करें तब कोटों में कोई निकलें।जाँच करनी पड़े कि यह सैंपलिंग कैसा है। बच्चियाँ लिखती हैं कि हमारा गला घुट गया है।परन्तु तुम जास्ती बातों में जाओ ही नहीं।पहली मुख्य बात समझाकर लिखाओ फिर और बात।एक ही त्रिमूर्ति चित्र पर पूरा समझाना है।निश्चय करते हो यह तुम्हारा माँ बाप है।इससे वर्सा मिलना है। कोई कितना भी बूढ़ा हो,यह दो अक्षर तो किसको भी समझा